वाह! जिंदगी-२

काव्य संग्रह

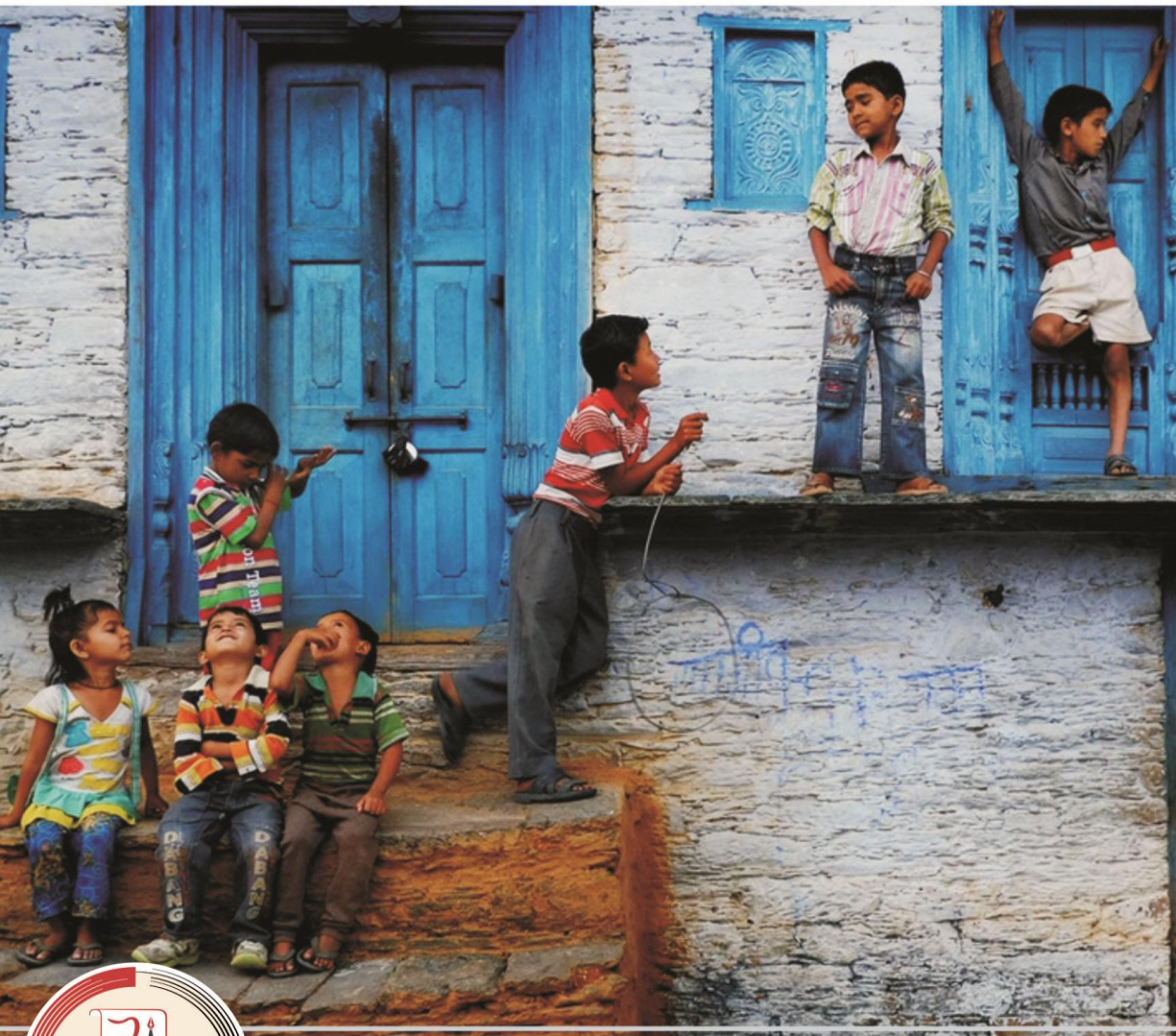

साधना छिरोल्या

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वाह! जिंदगी-2

काव्य संग्रह

श्रीमती साधना छिरोल्या

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-040-7"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं मिडिया प्रभारी - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **साधना छिरोल्या**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

WAH! JINDGI-2 BY SADHNA CHIROLIYA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मन की बात

'विद्या, बुद्धि के हो दाता,
मंगल करो सब काज,
हे गणाधीश! हे गणपति,
तुम राखियो मेरी लाज'।।

श्री हरि कृपा एवं आप सबके आशीर्वाद से मेरे प्रथम हिंदी काव्य संग्रह 'वाह!जिंदगी' का द्वितीय भाग आज आपके सम्मुख है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में अपने आस-पास ही, जिंदगी के विभिन्न रंगों से हर दिन रूबरू होता है, और इन्हीं रंगों को एक बार फिर मैंने अपनी लेखनी द्वारा शब्दों में पिरोने की कोशिश की है।

मैं जीवन के प्रति एक सकारात्मक सोच के साथ जीती हूँ, और मेरी यही सोच मुझे विषम परिस्थितियों में भी बिना विचलित हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करती है। बचपन से ही पढ़ने एवं लिखने का बहुत शौक था, इससे जुड़े कई पारितोषक भी प्राप्त हुये किन्तु आज अंतरा शब्द शक्ति ने अपने मंच के द्वारा मेरे अंदर छिपे रचनाकार को एक नया रूप प्रदान किया। इसके साथ के ही कारण 'वाह!जिंदगी' (काव्य संग्रह) एवं 'एक टुकड़ा मेघ' (कथा संग्रह) का

लेखन कार्य पूरा हुआ। ये मेरे साहित्यिक जीवन की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

मेरी सरल एवं सहज लेखनी मुझे आम जन मानस तक संवाद बनाये रखने में एक अहम् भूमिका निभाती है।आप सबका आशीर्वाद सदा यूँ ही मिलता रहे।

मेरा द्वितीय काव्य संग्रह 'वाह! जिंदगी-२' मेरे परिवार के स्तंभ परम पूज्यनीय, वंदनीय श्रद्धेय कक्काजी 'श्री सुदामा प्रसाद जी छिरोल्या' के चरण कमलों में सादर सस्नेह समर्पित।।

आप सबकी शुभकामनाओं की सदा आकांक्षी-

साधना छिरोल्या

दमोह (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

1.	वाह! जिंदगी	7
2.	सखी	8
3.	किताब	9
4.	ऐ! जिंदगी	10
5.	चक्रव्यूह	11
6.	हल	12
7.	गणपति	13
8.	अर्जी	14
9.	जय अम्बे माँ	15
10.	हे! कान्हा	16
11.	नवरात्रि	17
12.	व्यर्थ	18
13.	मेरी बिटिया	19
14.	मकर-संक्रांति	20
15.	आया बसंत	21
16.	सावन	22
17.	मेरे वीर जवान	23
18.	अभिनन्दन	24-25
19.	ऊँची सोच	26
20.	अहंकार	27
21.	पीड़ा मेरे अंतर्मन की	28

22.	दरिया	29
23.	वाह! नेताजी	30
24.	लेना-देना	31
25.	कहानी	32
26.	सच-झूठ	

वाह! जिंदगी

चलो आज बच्चों के साथ,
फिर बच्चे बन जायें,
कुछ पल सुकून के,
हम भी गुजार कर आयें।।

आज एक बार फिर-
साँप-सीढ़ी निकालकर,
खेलने बैठ जायें,
कभी सीढ़ी चढ़ने की खुशी,
तो कभी साँप डसने का,
अफसोस मना आयें।।
कुछ पल सुकून ...

आज एक बार फिर-
रसोई के पटे पर,
छुई से खाने खींच आयें,
और चार कौड़ी बिछाकर,
बच्चों के संग अठ्ठू,
खेलकर आयें।।
कुछ पल सुकून ...

आज एक बार फिर
स्नानघर की मुंगरी को
बल्ला बनाकर,
गली में क्रिकेट,
खेलकर आयें।।
कुछ पल सुकून ...

आज एक बार फिर-
बच्चों के साथ बैठकर,
'चाचा चौधरी और साबू'
की कहानियाँ,
पढ़कर आयें।।
कुछ पल सुकून ...

आज एक बार फिर-
इस भागदौड़ भरी जिंदगी से,
बच्चों को दूर रख,
उनका बचपन बचा लायें।।
कुछ पल सुकून ...

चलो आज जिंदगी को,
बच्चों के नजरिये से देखकर आयें,
कुछ पल सुकून के,
हम भी गुजार कर आयें

सखी

वो भी क्या दिन थे,
जब सखी, सहेली हमदम थे।

प्यारी सहेलियों के संग,
कहकहे लगाया करते थे,
बातों ही बातों में,
रेत के घर बन जाया करते थे।।
आई होली, महकी धरती,
खूब रंग भी खेला करते थे,
गुड्डे, गुड़िया की शादी भी,
मस्ती से रचाया करते थे।।

गर्मी आई, छुट्टी लाई,
दिन भर मस्ती भी करते थे,
पीपल के टूटे पत्तों से,
ताले-चाबी बन जाया करते थे।
कागज के नोट भी खूब बना,
बाजार सजाया करते थे,
और तीन लोग भी एक साथ,
कॉमिक्स मजे से पढ़ते थे।।

आया सावन का महीना,
संग मेहँदी लगाया करते थे,
भैया की कलाई के लिये,
राखियाँ बनाया करते थे।।
मंदिर, पिकनिक, फिल्म देखने,
सखियों के संग जाया करते थे,
बिन साईकिल, बिन लूना के ही,
पैदल चले जाया करते थे।।।

वो भी क्या दिन थे,
जब सखी, सहेली हमदम थे।।।

किताब

किताबों के पन्ने क्या खुले,
संग खिड़की, दरवाजे भी खुले,
यादों का पन्ना भी पलटा,
मन चंचल भी पीछे पलटा।।

बचपन और किताबों का,
रिश्ता होता इतना गहरा,
प्यारी सी यादें होती हैं,
संग जीवन भर जो चलती है।।

मोरपंख की डंडी भी,
किताबों की शोभा बढ़ाती थी,
चाकों के टुकड़ों के बदले,
सखियों से ही मिल जाती थी।।

ज्यादा विद्या की चाहत में,
उसकी भी कलम रख जाती थी,
और सावन के महीने में तो,
रेशम की टिक्की भी रख जाती थी।।

किसी प्रश्न में सही लगाकर,
आई.एम.पी. भी लिख जाता था,
किसी जरुरी लाइन के नीचे,
डंडा भी खिंच जाता था।।

पूरे पेजों को इकठ्ठा कर,
फिर नाम भी लिख जाता था,
चोरी होने के डर से तो,
गुप्त निशान भी लग जाता था ।।।

किताबों के पन्ने जो खुले,
संग खिड़की, दरवाजे भी खुले ।।।

ऐ! जिंदगी

ऐ! जिंदगी जरा ठहर,
थोड़ा तो सुस्तालें,
कुछ पल सुकून के गुजार लें।

ऐ! जिंदगी जरा ठहर,
तू भी है थकी-थकी,
हम भी हैं थके-थके,
चल जरा दो पल,
किसी पेड़ की,
ठंडी छाँव में गुजार लें।
कुछ पल ...

ऐ! जिंदगी जरा ठहर,
तू सदा,
दो दूनी चार, चार दूनी आठ,
के जोड़-तोड़ में फँसी रहेगी,
चल जरा,
इस चक्रव्यूह से बाहर निकल,
कुछ पल,
किसी शांत दरिया के किनारे गुजार लें।
कुछ पल ...

ऐ! जिंदगी जरा ठहर,
मन बहुत घबराता है,
इस शहर के शोरगुल,
और आदमी की कर्कश वाणी से,
चल जरा कुछ पल,
किसी बागीचे में,
पक्षियों की कलरव ध्वनि,
के बीच में गुजार लें।
कुछ पल ...

ऐ! जिंदगी जरा ठहर,
होने लगीं हैं अब सर्द रातें भी,
आ चल,
सुबह की गुनगुनी धूप में,
दो पल सुकून के गुजार लें।

ऐ! जिंदगी जरा ठहर,
थोड़ा तो सुस्तालें,
कुछ पल सुकून के गुजार लें।।।

चक्रव्यूह

'चक्रव्यूह में फँसी हुई सी जिंदगी,
इसको भेदकर अब कैसे निकलें।।'
क्या बतायें! हाल अपने,
इस बेहाल शहर का,
इसको बिगाड़ने वाले,
मेरे अपने ही निकले।।
आज फिर डाका पड़ा,
खुशियों के बाजार में,
और डकैत कोई नहीं,
मेरे अपने ही निकले।।
चले थे कुछ संकल्प लेकर,
इस जहाँ को सुधारने का,
अफसोस! बिगाड़ने वाले,
मेरे अपने ही निकले।।
किससे करें शिकवा?
किससे करें शिकायत?
मेरा आशियाना उजाड़ने वाले,
मेरे अपने ही निकले।।
आज फिर महफिल सजी ,
मेरे सिपहसालारों की,
और बेआबरू करने वाले,
कोई नहीं! मेरे अपने ही निकले।।
चक्रव्यूह में फँसी हुई सी जिंदगी,
इसको भेदकर अब कैसे निकले।।।

हल

सुरसा के मुँह सी ही होतीं,
रोज नई समस्यायें,
कैसे इनसे पार हैं पाये,
कोई तो ये बताये।।
हाथ-पैर नहीं होते इनके,
फिर भी संग है चलतीं,
सूझबूझ और कड़ी मशक्कत,
से ही ये हैं टलती।।
कभी बड़ी है, कभी हैं छोटी,
परछाईं सी होती,
एक खतम तो दूजी उपजती,
खूब डराये रखती।।
बहुत हो गया डरना-डराना,
अब सामना करना सीखें,
कभी न होगा इनका खात्मा,
अब विचलित होना छोड़ें।।
हल होती है हर समस्या,
कोशिश करने से ही,
मैंने हरदम यही है सीखा,
'कोशिश करने वालों की
कभी हार नहीं होती है'।।

गणपति

हे गणपति,गजानन,
लम्बोदर,
तुम लेते सबकी विपदा हर।।

हे गणाधीश, एकदंत,
विनायक,
तुम ही विद्या, बुद्धि दायक।।।

हे भालचंद्र, कपिला, विकट,
तुम ही हरते हमारे संकट।।।।

हे सिद्धिविनायक, वक्रतुण्ड,
तुम ही देते दुष्टों को दंड।।

हे गजमुख, हेरम, शूपकर्ण
तुम ही भरते मुझमें सत्कर्म।।

हे गणनायक, हे सुखकर्ता
तुम ही हो मेरे दुखहर्ता।।।।

हे उमापुत्र, हे सर्वेश्वर,
तुम ही हो मेरे परमेश्वर।।

हे प्रथमेश्वर, गौरीनंदन,
तुम रहते मेरे अंतर्मन।।

हे! विघ्नेश्वर, हे! विघ्नराज,
तुम ही सँवारो हमरे सब काज।।

हे भीम, भूपति, रुद्रप्रिय,
तुम सदा विराजो मेरे हृदय।।

हे सुमुख, गुणिन, बुद्धिदाता,
तुम ही हो सुख-संपति दाता।।

हे पीताम्बर, मूषक वाहन,
तुम ही करते दुष्टों का हनन।।

अर्जी

आज फिर अर्जी लगी,
कान्हा तेरे दरबार में।
नीच कर्मों से भी देखो,
नहीं है डरता आदमी,
पाप की गठरी है लादे,
हर कोई फिरता यहीं,
माँ-बहिन की आबरू फिर,
लुट रही बाजार में।।।
आज फिर ..
सजता है बाजार देखो,
स्वार्थ और फरेब का,
लोक और परलोक की,
चिंता किसी को है कहाँ,
बेचकर ईमान अपना,
घूमते बाजार में।।।
आज फिर..
आदमी ही आदमी को,
रोज ही डँसते यहाँ,
भेड़िये की खाल ओढ़े,
हर कोई दिखता यहाँ,
बाजियाँ शतरंज की तो,
बिछतीं हैं बाजार में।।।।
आज फिर अर्जी लगी,
कान्हा तेरे दरबार में।।।

जय अम्बे माँ

हे जगत् जननी,
हे अम्बे दयालु,
अपनी ममता का आँचल,
पसारे ही रखना।।

वो माँग का टीका,
और माथे की बिंदिया,
मेरे माँग का सिंदूर,
सजाये ही रखना।।
अपनी ममता का आँचल,
पसारे ही रखना।

वो नाक की नथनी,
और कान के झाले,
मेरे गले का हरवा चमकाये ही
रखना।।
अपनी ममता ..

वो बाजू बंद,
वो चूड़ी और कंगन,
मेरे हाथों की मेहँदी,
रचाये ही रखना।।
अपनी ममता ..

वो कमर की करधन,
वो पायल और बिछिया,
मेरे पाँव का माहुर लगाये ही
रखना।।
अपनी ममता ..

वो बालों का गजरा,
वो लहँगा और साड़ी,
मेरे चूनर की लाज,
बचाये ही रखना।।
अपनी ममता का आँचल,
पसारे ही रखना ।

हे! कान्हा

हे कान्हा! तू अब तो आ जा,
इन नयनों की प्यास बुझा जा,
झूम रही है सारी धरती,
तू भी अपनी छवि दिखला जा।।
टेसू ने है रंग बिखेरे,
गुलमोहर भी छाईं घनेरे,
आमों पर बौरें इठलाई,
एक झलक तू भी दिखला जा।।
केसर, टेसू के रंग बने हैं,
अबीर, गुलाल भी खूब उड़े है,
सात जनम न छूटने पाये,
ऐसे रंग में हमको रंग जा।।
कोयल भी मस्ती में गाये,
फाल्गुन अपना रंग जमाये,
काम, क्रोध, मद, लोभ छुटा दे,
ऐसी भक्ति हमको दे जा।
ईश-ईश हम तुझे पुकारे,
मन तो अकेला भटका सा रे,
हर इंसा हैं फँसा हुआ सा,
सबकी विपदा हरने आ जा।।
हे कान्हा! तू अब तो आ जा,
इन नयनों की प्यास बुझा जा।।

नवरात्रि

नवरात्रि के शुभ दिन आये,
चलो हम सब मैया को मनायें।।

चन्दन, कुमकुम, तिलक लगाकर,
हलवा, पूरी भोग लगायें,
सीप, सुनहरी गोटा साजे,
ऐसी चूनर हम पहनायें।।

धूप-दीप से करें आरती,
पुष्पहार से उन्हें सजायें,
काम, क्रोध, मद, लोभ हटा दे,
ऐसी प्रार्थना हरदम गायें।।

चंड-मुंड को है संहारे,
महिसासुर-मर्दिनी कहलाये,
मनोकामना पूरी करतीं,
सबके कष्टों को हर जाये।।

शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी,
चंद्रघंटा भी कहलाये,
सिंह पीठ पर करें सवारी,
अपने भक्तों के घर आये।।

कूष्माण्डा, स्कंदमाता,
कात्यायनी भी कहलाये,
सबके दुःख को हरतीं माता,
मैया का ये रूप कहाये।।

कालरात्रि, महागौरी,
सिद्धिदात्री भी कहलाये,
भक्तों के भंडार है भरती,
चलो हम सब मैया को मनायें।।

व्यर्थ

व्यर्थ की बातों में,
दिया समय बिताय,
जीवन के इस मोड़ पर,
खूब रहा पछताय।।

सोने से थे दिन रहे,
चन्दन सी थीं रात,
बेकार की बहस में,
किया समय खराब।।

संत जनों की वाणी को,
हरदम दिया भुलाय,
रात गँवाई सोय कर,
दिवस गँवायो खाय।।

काम, क्रोध, मद, लोभ का,
हरदम पकड़ा हाथ,
हाथ मले और सिर धुनें,
जब अपनों ने छोड़ा हाथ।।

कुछ ही जीवन शेष है,
अब तो मानव जाग,
नेकी के कुछ काम कर,
और धरम के काज।।

मेरी बिटिया

आज पिया के घर चली,
कर सोलह श्रृंगार,
जीवन में होती रहे,
खुशियों की बौछार।।
माथे पर बेंदी सजे,
नथनी लटकनडार,
कानों में झाला सजे,
गले में मोतिन हार।।
लटकन वाले बाजूबंद,
चूड़ी खनकदार,
हाथों में मेहँदी रचे,
कंगन नक्काशीदार।।
कमर में करधन सजे,
पायल घुँघरुदार,
पांवों में माहुर सजे,
बिछिया मीनाकार।।
बालों में गजरा सजे,
लँहगा रेशमदार,
माँग में सिंदूर सजे,
चूनर गोटेदार।।
आज पिया के घर चली,
कर सोलह श्रृंगार।।

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति का शुभ-दिन,
झूमें, गायें हम सब जन,
भगवान सूर्यदेव की,
कृपा बरसे हर क्षण।।
सूर्यदेव हुये उत्तरायण,
मकर राशि में पैठनी,
तिल-तिल करके रोज बढ़ेगी,
सूर्यदेव की रोशनी।।
गुड़-तिल के बनेंगे लड्डू,
मूंग-उड़द की पापड़ी,
खुरमा, सेव, सलोनी सोहे,
और तिली की रेवड़ी।।
तमिलनाडु पोंगल बोले,
कोई कहे उत्तरायिनी,
पंजाब में मने है लोहिड़ी,
हम कहें संक्रांति।।
भगवान भास्कर मिलने जाते,
पुत्र शनि से आज के दिन,
भागीरथ के पीछे चलीं हैं गंगा,
सागर से मिलीं आज के दिन।।
आसमान में उड़ी पतंगें,
देतीं हरदम ये ही सीख,
ऊँची सोच हमेशा रखना,
रे मानव, तू कुछ तो सीख।।

बसंत

आई ऋतु बसंत की,
धूम मची चहुंओर,
मौसम भी खुशनुमा हुआ,
मन हुआ भाव-विभोर।।
टेसू भी फूलन लगे,
आमों पर है बौर,
पीली सरसों देख के,
मन में उठी हिलोर।।
शिवजी हैं दूल्हा बने,
सरस्वती का जन्म,
चहुंओर दिखने लगे,
फाल्गुन के तो रंग।।
वृन्दावन उड़ने लगी,
देखो खूब गुलाल,
आओ मेरे ग्वाल-बाल सब,
राधा संग गोपाल।।।
फसलें भी पकने लगीं,
कोयल ने छेड़ी तान,
सैर करो इस मौसम में,
काया रहे बलवान।।
सृष्टि का आरम्भ हुआ,
कामदेव का प्रागट्य,
ऋतुराज कहलाये ये,
इसका इतना महत्व।।।

सावन

सावन की ऋतु आई है,
कर सोलह श्रृंगार,
जन-जन हैं हर्षित हुए,
गूंजन लगी मल्हार।।

नद-नाली पोखर भरे,
और भरे तालाब,
कृषक जन सब लीन हैं,
धान रोपने आज।।

पशु-पक्षी कलरव करें,
कोयल मधुर आवाज,
हरियाली चूनर ओढ़ के,
धरती भी नाचे आज।।

अमवा की डाल में झूला पड़े,
गूंजे कजरी की तान,
गोरी के हाथों में मेहँदी सजी,
भाई-बहिन की बढ़ गई शान।।

चन्दन का झूला सजा,
डोरी झालरदार,
झूल रहे हैं राधा संग,
मेरे साँवरिया सरकार।।।

मेरे वीर जवान

तन-मन अपना न्योछावर कर,
खड़े हो डटकर सीमा पर,
मेरे प्यारे वीरा तुम्हरी,
हम लें बलैयां जी भरकर।।
भेज रहीं हूँ पाती भैया,
स्नेह-प्यार से सींचकर,
हो सके तो आना भैया,
इस पावन रक्षाबंधन पर।।
माँ-बाबुल हैं राह देखते,
तुम्हारे घर पर आने की,
भावज के हाथों भी सज गईं,
हरी चूड़ियाँ सावन की।।
न सोना,न चाँदी माँगूं,
न रुपया बटुआ भर-भरकर,
जल्दी से बस आना भैया,
पावन रक्षाबंधन पर।।
कच्चा रेशम चुनचुन कर,
राखी बनाई प्यार से,
अपने हाथ से बाधूँ भैया,
यही कामना 'कान्हा'से।।

अभिनंदन

'हे वीर सपूत अभिनंदन,
हम करें तुम्हारा अभिनंदन'।।।

दीवाली के हैं दीप जले,
बरसाने की थी होली भी,
पूरा देश था सराबोर,
करने तुम्हारा अभिनंदन।।

पावन जल की बूंदें जो बरसीं,
हर शख्श यही था बोल उठा,
देखो हे वीर सिपाही तुम,
भगवान भी करते अभिनंदन।।।

हर मंदिर की घंटी थी बजी,
तेरी सलामती के लिये,
हर मस्जिद में थे हाथ उठे,
तेरी वापसी के लिये,
हर चर्च का घंटा भी बजा,
तेरी वीरता के लिये,
गुरुवाणी भी थी खूब पढ़ी,
तेरी सलामती के लिये।।।

पचपन घंटे उस पार रहे,
लगा के जान की बाजी,
दुश्मन भी था घायल हुआ,
देख तुम्हारी जाँबाजी।।।

हर चेहरे पर था नूर अलग,
हर इंसा की थी शान अलग,
हर शख्श मुझे यूं आज लगा,
जैसे हो सिपाही सेना का।।।

न कोई जाँत-पाँत रही,
न कोई राजनीतिक जन,
ऐसा है भारत देश मेरा,
ये है मेरा प्यारा वतन।।।

हे वीर सपूत अभिनंदन,
हम करें तुम्हारा अभिनंदन।।।

ऊँची सोच

देख तू! मानव अपनी करनी,
अब तो नियम बदल दे रे,
खूब बनाई ऊँची मूरत,
सोच तो ऊँची कर ले रे।
एक छोटी प्यारी सी मूरत,
माटी की तू बना ले रे,
दसवें दिन अपनी बगिया में,
प्रेम से विसर्जित कर ले रे।।
अपने गणपति को अपने ही,
हरदम घर में रख ले रे,
धन-धान्य की होगी वर्षा,
खूब विद्या पा ले रे।।
नदी-तालाब की देख तू हालत,
भविष्य की चिंता कर ले रे,
खूब बनाई ऊँची मूरत,
अब सोच तो ऊँची कर ले रे।।
खूब दिखाई ऊपरी भक्ति,
तरह-तरह के ढोंग रे,
अभी समय संभल जा प्यारे,
वक्त बड़ा बलवान रे।।।

अहंकार

अहंकार का पहने चोला,
गली-गली में भटके रे,
अपनी ही चालों में उलझा,
मकड़जाल सा फँसा रे।।
दोष दिये ऊपर वाले पर,
अपने दम्भ को भूले रे,
कभी बैठ अपने कर्मों का,
लेखा-जोखा करले रे।।
खूब लगाई हरदम प्यारे,
अपने ही घर में आग रे,
अब चला तू कुआँ खोदने,
और रहा पछताये रे।।
अपना-अपना करते-करते,
अपने में ही सिमटा रे,
अब तो प्यारे अपनों के संग,
कुछ तो समय बिता ले रे।।
शतरंज की बाजी बिछाई,
अपनों के ही बीच रे,
जीत कर भी हार गया तू,
खेल तू ऐसा खेला रे।।

पीड़ा मेरे अंतर्मन की

एक नारी के मन की पीड़ा,
एक नारी ही समझ न पाये,
एक नारी को दुःख देने से,
एक नारी ही है बाज न आये।।
एक नारी की सूनी कोख पर,
एक नारी ही तंज है कसती,
एक नारी के रूप-रंग पर
एक नारी हँसी-ठिठोली करती।।
कितने जख्म लगे सीने पर,
कभी नहीं जो हैं भरते,
नारी ही नारी की दुश्मन,
यूँ ही लोग नहीं कहते।।
अपने अंतर्मन की बगिया को,
खुद को ही सींचना होगा,
पुरुषों की तो बात ही छोड़ो,
पहले नारी से ही जूझना होगा।।
एक नारी दूजी नारी को,
जब तड़पाना बंद करेगी,
महिला-दिवस मनाने की,
सार्थकता तभी सिद्ध होगी।।

दरिया

आज फिर जा बैठी दरिया के
किनारे,
वही खूबसूरत किनारा,
वही बलखाती लहरें,
खूबसूरत पत्थर,
और नदी का अविरल प्रवाह,
कुछ भी तो नहीं बदला।।

बदला है तो सिर्फ,
मेरा परिवेश,
मेरा वजूद,
और साथ है सिर्फ और सिर्फ,
मेरा अकेलापन।।

हर बार सोचती,
अब नहीं आना इस गली,
पुरानी खूबसूरत यादें
तड़पातीं हैं,
रुलातीं हैं।।

किन्तु मन बावरा,
शांत कहाँ होता है,
नहीं तुझे आना होगा,
ये खूबसूरत यादें ही,
तेरे जीने का सहारा हैं।।

वरना तेरी इस,
बेरंग जिंदगी में है क्या??
मैं भी उठतीं हूँ,
जाती हूँ उस काले चिकने
पत्थर के पास,
जिस पर लिखा करती थी,
रोज बड़े शौक से अपना नाम,

आज फिर लिखूं,
अपना नाम,
भरूँ कुछ रंग,
और जोडू एक
खूबसूरत यादों की कड़ी

वाह! नेताजी

इधर-उधर की बातें करके,
जीवन-यापन करते रहते,
दो और दो को पांच बताते,
ऐसे तो विचार हैं रहते।।
इसकी टोपी उसके सिर पर,
रोज ही ये तो करते रहते,
लालच और बदनीयत की ये,
जीती-जागती मूरत बनते।
जैसे-तैसे काम हैं करते,
जनता को बेवकूफ समझते,
अपनी गलती का ठीकरा,
दूजे के हैं सर फोड़ते।।
अपने ही वादों से मुकरते,
नित्य नई एक चाल हैं चलते,
इक थैली के चट्टे-बट्टे,
जनता पर ही राज हैं करते।
साम,दाम और दंड भेद की,
जीती-जागती मूरत बनते,
इन्हें नहीं है डर किसी का,
ईश्वर को भी नहीं छोड़ते।

लेना-देना

इंसान की फितरत हो गई ऐसी,
ईमान से क्या लेना-देना,
झूठ, फरेब और मक्कारी,
बेईमानी का चोला पहना ।
सबसे ऊपर स्वार्थ को रखके,
ईश्वर से भी नहीं हैं डरना,
इनका तो बस एक ही धर्म है,
झूठ ही लेना झूठ ही देना।।
पाप कर्म से नहीं हैं डरते,
आस्तीन का साँप हैं बनना,
मुँह में राम बगल में छुरी,
यही है बस इनका गहना ।
ऐसी नीयत हो गई इनकी,
विष का ही घट बनकर रहना,
एक-दूजे की टाँग खींचकर,
अपना उल्लू सीधा करना ।
एक-दूजे पर बाण चलाकर,
सदा ही जहर उगलना,
छाती में है घाव बनाकर,
ऊपर से है नमक छिड़कना ।

कहानी

यूँ हीं नहीं लिख जाती,
फिर कोई कहानी।।
बार-बार पढ़ना पड़ता है,
अतीत के पन्नों को,
और बार-बार पकड़ना पड़ता है
वर्तमान की परछाइयों को,
यादों के झरोखे,
बारी-बारी से बंद-खोले जाते हैं
तब कहीं रचती है एक नई कहानी।।
कभी गोते लगाना पड़ते है,
कल्पनाओं के समुन्दर में,
और कभी जूझना पड़ता है,
भविष्य कि आहटों से,
कभी डूबकर कभी उतराकर,
पार निकलना होता है,
तब कहीं रचती है,
एक नई कहानी।।
भूत, भविष्य, वर्तमान,
तीनों का संगम होता है,
हर शब्द-शब्द का जोड़ होता है,
इन सबका मिलन होता है,
तब कहीं रचती है एक नई कहानी।।
यूँ ही नहीं लिख जाती
फिर कोई कहानी।।।

सच-झूठ

आज फिर चौराहे पर,
सच की झूठ से,
मुलाकात हो गई,
और फिर उन दोनों में
ठन गई।।
झूठ बोला देखो हर तरफ,
मेरा ही है बोलबाला,
और मेरे दम पर,
अच्छे-अच्छों ने किया झोल-झाला।।

मेरे दम पर, हाँ मेरे दम पर,
सबकी शान तो देखो,
और तो और नेताजी ने
इतना बड़ा चुनाव ही जीत डाला।।

फिर क्या था-
सच भी तमतमा गया, बोला
मेरे बुजुर्ग कहा करते थे,
सच्चे का बोलबाला,
और झूठे का मुँह काला,
कबीरा भी कह गए-
साँच बराबर तप नहीं
झूठ बराबर पाप।।

एक बात सुन मेरी खरी-खरी,
झूठी शान बालों के,
मकान ढहते देर नहीं लगती,
और भ्रष्ट नेताओं की,
कुर्सी हिलते देर नहीं लगती।।

झूठ का लबादा,
कितना ही मोटा हो,
सच की आँधी ने,
उसे हमेशा ही उड़ा डाला।।
फिर क्या था,
झूठ ने दबे पाँव,
खिसक लिया,
और सच अपना,
सीना तानकर चल दिया।।

सच-झूठ की ये कहानी,
है तो सदियों पुरानी,
चलती रहेगी सदियों तक,
कभी इसकी जुबानी, कभी उसकी
जुबानी।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम : **साधना छिरोल्या**

पति : श्री कैलाश छिरोल्या

जन्म : १७मार्च १९६४,जबलपुर (म.प्र.)

शिक्षा : बी.एस. सी.बी.एड.(गणित)

पता : यूनियन बैंक के सामने,राय चौराहा ,दमोह(म.प्र.)४७०६६१

मो. : ७०८९७३५१३५

ई.मेल : Sadhnachhirolya123@gmail.com

प्रकाशन : १. गहोई सूर्य अखबार जबलपुर (म.प्र.), २. गहोई संस्कार पत्रिका जबलपुर, ३. गहोई बंधु ग्वालियर (म.प्र), ४. दैनिक स्वदेश ग्वालियर, ५. लोकजंग भोपाल, ६. 'वाह! जिंदगी' (हिंदी काव्य संग्रह), ७. 'एक टुकड़ा मेघ' (हिंदी कथा संग्रह), ८. 'प्रभाश्री पत्रिका' वाराणसी (उ.प्र.)।
साझा संकलन- १. कश्तियों का सफर (काव्य संकलन), २.उम्मीदों के परिंदे (काव्य संकलन) ३. यादों का सफर (यात्रावृतांत), ४. स्त्री तुम सृजक, ५. वुमन आवाज २(स्त्री), ६. साहित्य सरोवर, ७. क्रांति संगठन पत्रिका

सम्मान : १. भाषण, नाटक, वाद-विवाद, तात्कालिक निबंध, कविता, सुलेख प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त, २. गहोई समाज और हितकारिणी स्कूल जबलपुर द्वारा हिंदी काव्य लेखन के लिये सम्मानित, ३. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान२०१९, ४ मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा हिंदी योद्धा सम्मान, ५. हिंदी साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान २०१९, ६. कवि चौपाल शारदा सम्मान, ७. अंतरा शब्द-शक्ति द्वारा कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कार, ८. अ.भा.सा.परि. विराटनगर जयपुर द्वारा सर्वश्रेष्ठ सृजन 'साहित्य गौरव' पुरस्कार, ९. काव्य गोष्ठी सबके लिये द्वारा उत्कृष्ट सृजन पुरस्कार, १०. प्रभाश्री द्वारा साहित्य सम्मान, ११. वुमेन आवाज द्वारा महिला दिवस साहित्य सम्मान, १२. साहित्यिक मासिक स्पर्धाओं में सम्मान।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-040-7
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध